वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष २५५०, पौष पूर्णिमा, ३ जनवरी, २००७ वर्ष ३६ अंक ७

Hindi Patrika on Website: www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html

धम्मवाणी

यं किञ्चि रतनं लोके, विज्जति विविधा पुथु।
रतनं धम्मसमं नत्थि, तस्मा सोत्थि भवन्तु ते॥

लोक में जो विविध प्रकार के रत्न हैं, उनमें से कोई भी धर्म-रत्न जैसा नहीं है। इस सत्य से तुम्हारी स्वस्ति हो!

– महाजयमंगलगाथा - १७.

पुक्कुसाति कथा--(१)

धरम रतन उपहार

विपश्यना साधना पर भगवान बुद्ध द्वारा दिये गये एक परम कल्याणकारी उपदेश के संदर्भ में एक और चित्र उभर कर आया है, जिसमें मगधनरेश बिंबिसार की धर्म-मैत्री उजागर होती है।

उन दिनों न तो यातायात के और न ही संवाद-संचार के साधन आज जैसी त्वरा और सुविधापूर्ण थे। अतः दूर-दूर देशों के पारस्परिक राजनयिक संबंध स्थापित करना सरल नहीं था। बिंबिसार अपने स्वभाव से ही सुदूर देश के राजाओं से मैत्री-संबंध स्थापित करना चाहता था। अतः ऐसे अवसर देखता रहता था, जिससे उसका मंतव्य पूर्ण हो।

एक बार गंधार देश की राजनगरी तक्षशिला से व्यापारियों का एक सार्थ उस ओर की उपज का सामान मगध देश में बेचने तथा यहां की उपज का सामान खरीद कर अपने देश में ले जाने के लिए राजगीर आया। उन दिनों व्यापारियों के ऐसे 'सार्थ' यानी 'कारवां' के जरिए ही दो देशों का पारस्परिक व्यापार-वाणिज्य चलता था। ये व्यापारी राजगीर पहुँचने पर, उन दिनों की मान्य प्रथा का पालन करते हुए सर्वप्रथम महाराज बिंबिसार को नजराना भेंट करने के लिए, उसके दर्शनार्थ राजदरबार में पहुँचे।

कुशल-क्षेम पूछने के बाद बिंबिसार ने प्रश्न किया –"किस देश से आये हो?"

"तक्षशिला से महाराज!"

"कौन शासक है तुम्हारे देश का?"

"राजनरेश पुक्कुसाति, महाराज!"

"क्या वह धर्मिष्ठ राजा है?"

"अत्यंत धर्मिष्ठ है महाराज! प्रजा का पालन अपनी संतान की भांति करता है। प्रजा के सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख समझता है।"

"क्या उम्र है उसकी?"

"आप जितनी ही महाराज!"

"उम्र में भी मेरे बराबर और प्रजा-वत्सलता का राजधर्म निभाने में भी मेरे समकक्ष। तब तो ऐसे व्यक्ति से मैं अवश्य मैत्री-संबंध स्थापित करना चाहूंगा। वणिको, क्या तुम मेरी इच्छा-पूर्ति में सहायक बन सकते हो?"

"अवश्य महाराज!"

"तो जाओ, व्यापार-धंधे का काम पूरा करके स्वदेश लौटने के पहले मुझसे एक बार फिर मिल लेना। तुम्हारे माध्यम से मैं तुम्हारे नरेश के प्रति मैत्री-संदेश भेजूंगा।"

"ऐसा संदेश ले जाने में हमें अत्यंत प्रसन्नता ही होगी महाराज!"

कुछ दिनों बाद वे अपने साथ लाये हुए गांधारी उपज का सामान बेच कर, मागधी उपज का सामान खरीद कर स्वदेश लौटने लगे तो वायदे के अनुसार महाराज बिंबिसार से मिलने आये।

महाराज बिंबिसार ने कहा, "नरेश पुक्कुसाति से मिलने पर मेरी ओर से बार-बार उसका कुशल-क्षेम पूछना और कहना कि मैं उसे अपना मित्र बनाने के लिए उत्सुक हूं। उसके प्रति मेरा गहरा मित्रभाव प्रकट करना।"

व्यापारियों ने स्वीकृति दी और प्रसन्नचित्त स्वदेश लौटे। तक्षशिला में गंधार-नरेश पुक्कुसाति से मिल कर उसे मगध सम्राट का मैत्री-संदेश दिया। पुक्कुसाति बहुत आह्लादित हुआ। उसने व्यापारियों के प्रति अपना आभार प्रकट किया। मगध जैसे विशाल, शक्तिशाली साम्राज्य के सम्राट से मित्रता होनी गंधार-नरेश के लिए सचमुच गौरव की बात थी। इस मैत्री को अधिक पुष्ट करने के लिए उसने समझदारी के अनेक राजनयिक कदम उठाये।

कुछ ही दिनों में मगध देश से व्यापारियों का एक सार्थ वाणिज्य हेतु तक्षशिला पहुँचा। ये व्यापारी जब भेंट-नजराना ले कर गंधार-नरेश से मिलने आये तो उसने प्रसन्नता प्रकट की। मगध-नरेश के कुशल-स्वास्थ्य के बारे में पूछ-ताछ की और यह घोषणा की कि ये व्यापारी मेरे मित्र के देश से आये हैं। अतः मेरे अतिथि हैं, गंधार राज्य के अतिथि हैं। उसने तक्षशिला नगर में भेरी बजवा दी कि मेरे मित्र मगध-सम्राट के देश से जो व्यक्ति गंधार देश में व्यापार करने आये, अकेला या सार्थ समूह के साथ, पैदल या गाड़ी पर, जैसे भी आये, उसे राजकीय मेहमान माना जाय। साथ-साथ यह भी ध्यान रखा जाय कि मेरे मित्र-देश के नागरिक होने के कारण ऐसे लोगों की सुरक्षा का विशेष प्रबंध हो। उन्हें राजकीय कोष्ठागार (अतिथिशाला) में ठहराया जाय। उन्हें मेरे देश में कोई कष्ट न हो। उनके साथ आये बिक्री के सामान पर कोई आयात चुंगी न ली जाय।

सम्राट बिंबिसार को जब यह सूचना मिली तो उसने भी महाराज पुक्कुसाति को अपना अदृश्य मित्र घोषित करते हुए अपनी राजधानी में यह डूंडी पिटवा दी कि गंधार देश के व्यापारियों को वह सारी सुविधाएं दी जायँ जो कि मगध के व्यापारियों को गंधार देश में दी जाती हैं।

आजकल भी दो राष्ट्रों में मैत्री-संधि होने पर आवागमन, आयात-निर्यात और चुंगी की मुआफी अथवा अन्य राष्ट्रों के मुकाबले कम चुंगी लिए जाने का प्रावधान होता है। मित्र-राष्ट्र को 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' घोषित किया जाता है और 'ड्यूटी-फ्री' या 'ड्यूटी-प्रिफरेंस' की सुविधा दी जाती है। वर्तमान युग की इसी राजनयिक नीति का यह पूर्व संस्करण हमें इस चित्र में देखने को मिलता है। परंतु विशेषता यह है कि उन दिनों मित्र-राष्ट्र के नागरिकों को राज्य-अतिथि का-सा सम्मान भी दिया जाता था। परंतु यह तभी संभव था, जबकि लोगों का आना-जाना बहुत सीमित संख्या में हुआ करता था। जो भी हो, उपरोक्त घटना यह साबित करती है कि उन दिनों के भारत में भी दो देशों की मित्रता निभाने के लिए इस प्रकार की सुविधाएं दी जाती थीं। हां, यह अंतर अवश्य था कि एक तंत्र शासकों का राज्य होने के कारण दो शासकों की व्यक्तिगत मैत्री ही दो राष्ट्रों की मैत्री में बदल जाती थी। जैसे कि मैत्री तो बिंबिसार और पुक्कुसाति में हुई और उसका लाभ दोनों देशों के नागरिकों को और उनके पारस्परिक व्यवसाय-व्यापार को मिला।

दोनों शासकों का मैत्रीभाव दिनोंदिन दृढ़ से दृढ़तर होता गया। एक दूसरे को देख नहीं पाये, परंतु समय बीतते-बीतते पारस्परिक पत्राचार से तथा बहुमूल्य उपहारों के आदान-प्रदान से अत्यंत पुष्ट हो गया।

जैसे आज के कश्मीर में वैसे ही उन दिनों के कश्मीर में भी, जो कि गंधार देश का एक अंग था, बहुमूल्य ऊनी शाल-दुशाले बनते थे, जो कि मगध जैसे मध्यदेश में दुर्लभ थे। एक बार पुक्कुसाति ने अपने मित्र को आठ बहुत कीमती और खूबसूरत पँचरंगी ऊनी शालें भेजीं, जिनकी बनावट अद्वितीय थी। यह तोहफे की पिटारी बड़ी धूमधाम के साथ राजगीर भेजी गयी, जहां एक बृहत समारोह में, राज-अमात्यों और प्रमुख नागरिकों की उपस्थिति में खोली गयी। लोग इन उपहारों को देख कर हर्ष और विस्मय-विभोर हुए। ऐसी बेशकीमती शालें मगधवासियों ने पहले कभी देखी भी नहीं थीं, प्रयोग करना तो दूर रहा। कैसा नयनाभिराम रंग! कैसा सुकोमल स्पर्श और कितनी विशाल! प्रत्येक शाल आठ हाथ चौड़ी और सोलह हाथ लंबी!

लोगों ने अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए अँगुलियां चटकायीं और अपने दुपट्टे हवा में उछाले (जिस प्रकार कि आजकल ताली बजा कर हर्ष प्रकट करते हैं)। बिंबिसार भी इन उपहारों से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने इनमें से चार शालें भगवान के विहार में दान-स्वरूप भिजवा दीं और शेष चार राजमहल में। लोग भी इन दुर्लभ उपहारों की प्रशंसा करते हुए अपने-अपने घर लौटे। गंधार-नरेश पुक्कुसाति ने अपने मित्र मगधराज को कीमती शाल भेजी, इसकी खूब लोक-चर्चा हुई। राजमहल लौट कर बिंबिसार सोचने लगा कि मित्र की इस रत्न-सदृश बहुमूल्य भेंट के बदले मुझे इससे अधिक मूल्यवान भेंट भेजनी चाहिए। क्या राजगीर में इससे उत्तम रत्न नहीं है, जिसे उपहार-स्वरूप भेजा जाय? अवश्य है।

बिंबिसार जब से भगवान के संपर्क में आया और अपने भीतर नित्य, शाश्वत, ध्रुव, अमृतपद निर्वाण का स्वयं साक्षात्कार करके स्रोतापन्न हुआ, तब से बहुमूल्य से बहुमूल्य, महार्घ से महार्घ लोकीय वस्तु उसके लिए स्पृहणीय नहीं रह गयी। यद्यपि वह अपने सांसारिक उत्तरदायित्व को भलीभांति निभाता रहा, पर आसक्तियां टूटने लगीं। अब वह रत्न का सही पारखी बन गया। अतः इसी दिशा में उसका चिंतन चला।

संसार में रत्न तो बहुत प्रकार के होते हैं। हीरे-पन्ने जैसे निर्जीव रत्नों की तुलना में सजीव रत्न उत्तम। हाथी-घोड़े जैसे सजीव रत्नों की तुलना में पुरुष और नारी रत्न उत्तम। सामान्य पुरुष-नारी रत्नों की तुलना में आर्य श्रावक रत्न उत्तम। आर्य श्रावक रत्नों की तुलना में बुद्ध-रत्न ही सर्वोत्तम। मैं सचमुच भाग्यशाली हूं कि मेरे राज्य में बुद्ध जैसा सर्वश्रेष्ठ रत्न विद्यमान है।

बिंबिसार ने गंधार से आये हुए सार्थवाहकों से पूछा;

"क्या तुम्हारे यहां बुद्ध, धर्म और संघ जैसे रत्न विद्यमान हैं?"

उन्होंने उत्तर दिया, "नहीं, महाराज!"

बिंबिसार ने सोचा, तब तो मुझे ये ही रत्न भेजने चाहिए, जिससे कि मेरे मित्र का भी कल्याण हो और उस जनपद के निवासियों का भी। अभी-अभी भगवान दुर्भिक्ष और व्याधियों से पीड़ित वैशाली नगर जा कर आये हैं। उनके वहां पहुँचते ही दुर्भिक्ष सुभिक्ष में बदल गया। वैशाली की सारी आधि-व्याधि दूर हो गयी। लोग भगवान की शिक्षा की ओर मुड़े। उनका कल्याण हुआ। इसी प्रकार यह बुद्ध-रत्न गंधार देश जाय तो सचमुच उनका बड़ा कल्याण होगा। परंतु वह प्रत्यंत प्रदेश इस मध्यम देश से इतनी दूर है कि वहां विहार करने के लिए भगवान से प्रार्थना करना उचित नहीं लगता।

भगवान के प्रमुख शिष्य सारिपुत्त और महामोग्गलायन को भी वहां जाने के लिए प्रार्थना नहीं कर सकता, क्योंकि उनके यहां रहने से मुझे अपूर्व आश्वासन मिलता है। जब कभी किसी प्रत्यंत प्रदेश में धर्मचारिका के लिए चले जाते हैं तो थोड़े समय के बाद ही संदेशवाहक भेज कर उन्हें राजगृह आने के लिए साग्रह आमंत्रित करना पड़ता है। उनकी अनुपस्थिति में मुझे बड़ा अभाव-सा लगता है। अतः उन्हें भी इतनी दूर नहीं भेजा जाना चाहिए। तो क्या करूं?

तत्काल मन में यह बात उपजी कि मेरे मित्र के यहां धर्म पहुँच जाय, तो बुद्ध ही पहुँच गये, संघ ही पहुँच गया। आखिर धर्म ही वह रत्न है जो बुद्ध और संघ में है। अतः मेरे मित्र के पास उपहार स्वरूप धर्म ही भेजना चाहिए। बिंबिसार ने यह निर्णय किया और शीघ्र ही धर्म का उपहार भेजने की तैयारी में लग गया। उसने स्वर्णकारों से एक बहुत लंबा स्वर्ण-पत्र बनवाया। न इतना पतला कि मुड़ने पर टूट जाय और न इतना मोटा कि मुड़ ही न पाये।

जब उपयुक्त स्वर्ण-पत्र तैयार होकर आ गया तो महाराज बिंबिसार सुबह-सुबह नहा-धो कर स्वच्छ, श्वेत, सादे कपड़े पहन कर तैयार हुआ। माला, गंध, विलेपन, मंडन तथा अलंकार-आभूषण आदि धारण करने से विरत रह कर उसने अष्टशील व्रत लिया और प्रातःकालका नाश्ता करके राजमहल के

खुले बरामदे में आ बैठा। उसने एक स्वर्ण-सलाखा हाथ में ली और हिंगुल-सिंदूर द्वारा बने विशिष्ट रंग से बड़ी श्रद्धापूर्वक उस स्वर्ण-पत्र पर लिखना आरंभ किया--

'यहां लोक में तथागत उत्पन्न हुए हैं। वे भगवान हैं, अरहंत हैं, सम्यक संबुद्ध हैं, विद्याचरणसंपन्न हैं, सुगत हैं, लोकज्ञ हैं। लोगों को सही रास्ते ले जाने वाले अनुपम सारथी हैं। देवताओं और मनुष्यों के शास्ता हैं। ऐसे हैं भगवान बुद्ध!'

तदनंतर उसने भगवान के जन्म, महाभिनिष्क्रमण, दुष्करचर्या, बोधिवृक्ष तले सम्यक संबोधि के साथ-साथ सर्वज्ञता की उपलब्धि और तत्पश्चात लोक-कल्याणके लिए की जा रही धर्मचारिका के बारे में संक्षेप में लिखा और बताया कि यहां-वहां तथा परलोक में कहींभी तथागत जैसा अन्य कोईरत्न नहीं है।

इसके बाद अत्यंत श्रद्धापूर्वक धर्म के बारे में लिखा कि जो भगवान सिखाते हैं वह सु-आख्यात है, उसमें रहस्यमयी उलझनें नहीं हैं। सांदृष्टिक है, कल्पनाओंसे परे है। अकालिकहै, तत्काल फलदायीहै। स्वयं आकरदेखने लायक है, सीधे मुक्ति कीओर ले जाने वाला है, और प्रत्येक समझदार व्यक्ति के लिए स्वयं अनुभूति पर उतारने लायक है।

और फिरभगवान के उपदेशों कीसंक्षिप्त व्याख्या करतेहुए सैंतीस बोधिपक्षीय धर्मों काविवरण दिया और लिखा कि भगवान जब धर्म सिखाते हैं और उसके अभ्यास द्वारा जो समाधि लगती है, वह लोकीय समाधि ही नहीं, प्रत्युत उसके साथ इंद्रियातीत फल-समापत्ति भी प्राप्त होती है। निर्वाण की अवस्था का भी साक्षात्कारहोता है।

"समाधिमानन्तरिक ञ्ञमाहु"– इस समाधि काकोईमुकाबला नहीं। धर्म में यह भी अनमोल रत्न है।

और फिरसंघ-रत्न के बारे में समझाते हुए लिखा कि भगवान का श्रावक संघ सुमार्गी है, ऋजुमार्गी है, ज्ञानमार्गी है, और समीचीनमार्गी है। भगवान उन्हें ही श्रावक संघ मानते हैं, जो कि स्रोतापन्न अथवा सकदागामीअथवा अनागामी अथवा अरहंत पद कोप्राप्त करचुके हैं। वस्तुतः ऐसे व्यक्ति परम पूजनीय हैं। इनमें से कितने ऐसे हैं, जिन्होंने राजसिंहासन त्यागा है या उपराज-पद त्यागा है अथवा मंत्री या सेनापति पद त्यागा है और प्रव्रजित हुए हैं। यों प्रव्रजित होकर महाशील कापालन करते हुए इंद्रियों पर स्मृति संप्रज्ञान का पहरा लगा कर संवर करना सीखा है और आस्रवमुक्त अरहंत अवस्था प्राप्त कीहै।

तदनंतर उसने सोलह प्रकारकीआनापान स्मृति-साधना की व्याख्या लिखी। जब पत्र समाप्त करनेलगा तो एकाएकएक बात ध्यान में आयी कि मेरे मित्र के पास पूर्व जन्मों की अच्छी पुण्य पारमी होगी तो पत्र पढ़ करउसके मन में धर्मसंवेग जागेगा। धर्म के सैद्धांतिक पक्ष से वह बहुत प्रभावित होगा। परंतु धर्म कापरम मुक्तिदायी मार्ग यानी विपश्यना उसे कैसेप्राप्त होगी? मध्यदेश के लोग बहुत भाग्यशाली हैं जो भगवान से यह विद्या प्रत्यक्ष सीखते हैं और मेरी तरह सांसारिक जिम्मेदारियों को भी निभाते रहते हैं। लेकिनमेरे मित्र पुक्कुसाति के लिए यह शक्य नहीं होगा। उसका कल्याण इसी बात में है कि वह शासन की जिम्मेदारियां किसी अन्य योग्य व्यक्ति कोसौंप दे और स्वयं घर-बार छोड़ करप्रव्रज्या ग्रहण करे और भगवान से विपश्यना सीख कर परम मुक्त अवस्था कासाक्षात्कारकरले। मन में यह भाव आते ही उसने पत्र के अंत में लिखा, "यदि तुम्हारे मन में धर्म-संवेग जागे तो यहां आकर भगवान से प्रव्रज्या ग्रहण करलो और अपनी मुक्ति साध लो।"

(क्रमशःअगले अंक में)

कल्याणमित्र,
स. ना. गो.

(नये साधकोंके लाभार्थ 'जागे पावन प्रेरणा' पुस्तक से साभार उद्धृत)

धम्मगिरि पर विशिष्ट धर्मसेवकों की आवश्यकता

धम्मगिरि पर स्थाई रूप से कम्प्युटर पर **प्रकाशन संबंधी** काम करने के लिए **'कोरल वेंचुरा'** और **'पेजमेकर'** में पेज-सेटिंग के जानकार **डेस्क-टाप ऑपरेटर** की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति शीघ्र संपर्क करें।

इसी प्रकार **ग्राफिक डिजाइनर, कोरल ड्रा** आदि में दक्ष कम्प्युटर के जानकार व्यक्ति अपनी सेवाएं दे सकते हैं।

विसुअल आर्टिस्ट, लैंडस्केप आर्कीटेक्ट, साइनबोर्ड मेकर्स, बागवानी और **सुरक्षा** जैसे कार्यों में दक्ष धर्मसेवक-धर्मसेविकाएं धम्मगिरि पर रह कर अथवा अपने घर से आ-जा कर अपनी सेवाएं देना चाहें (चाहे महीने में एकाध बार निरीक्षण के लिए ही सही) अपनी सेवाएं दे सकते हैं।

जिन्हें आवश्यकता होगी, आने-जाने के खर्च के साथ कुछ अतिरिक्त खर्च दिया जा सकता है। इन सब के लिए कृपया धम्मगिरि के व्यवस्थापक से संपर्क करें।

शरीर-च्युति

★ चेन्नई की सहायक आचार्या श्रीमती कृष्णाकुमारीकुरुप का भीषण सड़क दुर्घटना के कारण७ दिसंबर, २००६ कोशरीर शांत हुआ। उन्होंने केरल के नए केंद्रके निर्माण में प्रमुख भूमिकानिभाई। उनके पति (वरिष्ठ स. आ.) श्री रघुनाथ कुरुपके साथ मिल करअनेक शिविरों में सेवाएं दी थीं। ऐसी निःस्वार्थ धर्मसेवाओं के प्रभाव से उनका बहुविधि मंगल हो तथा पूरे परिवार को धैर्य-संबल प्राप्त हो!

★ मैसाचुसेट्स (अमेरिका) कीवरिष्ठ सहायक आचार्या श्रीमती टेरी कर ने १५ दिसंबर, २००६ कोअपने परिवार तथा अनेक मित्रों की उपस्थिति में शरीर छोड़ा। वह अनेक शिविरों में सम्मिलित होकरस्वयं तो लाभान्वित हुई ही, उत्तरी अमेरिकामें धर्मप्रसार में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिकानिभाई और देश-विदेश में अनेक शिविरों कासंचालन करके बहुतों को धर्मलाभ ले सकनेमें सहायिका बनी। इन धर्मसेवाओं के फलस्वरूपउसकातथा परिवार कामंगल हो!

★ जयपुर के आचार्य श्री रामनिवास शर्मा भी किसी सड़क दुर्घटना के कारण गंभीर रूप से घायल हुए और १६ दिसंबर, २००६ कोशरीर त्यागना पड़ा। उन्होंने जयपुर के विपश्यना केंद्र पर अनेक प्रकार की सेवाएं दीं और सहायक आचार्य, वरिष्ठ स. आ. और पूर्ण आचार्य बन करअनेकोंके मंगल में सहायक बने। इन अनुकरणीय सेवाओं के फलस्वरूप उनका तथा उनके पूरे परिवार काबहुविधि मंगल हो!

(**नोट –** हर माह अनेक साधक-साधिकाओंकी शरीर-च्युति के समाचार मिलते रहते हैं, परंतु स्थानाभाव के कारणउन सब कोसम्मिलित करपाना संभव नहीं है। उन सब दिवंगतों के प्रति पूज्य गुरुदेव कीसमस्त मंगल मैत्री और उनके परिवार के प्रति धम्म परिवार कीहार्दिक संवेदनाएं।)

आस्था टी. वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी का प्रवचन

आस्था टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः ९:४५** बजे प्रसारित हो रहे है। साधक अपने ईष्ट-मित्रों सहित इसकालाभ ले सकतेहैं।

"जी" टी.वी. पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव के साथ कीगयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टीवी पर अब **सोमवार से गुरुवार** तक **प्रातः ४:३० बजे** या उनकी सुविधानुसार प्रसारित होती है। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' कीबारीकि योंकोविस्तार से समझाते हैं।

Postal Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08 **Postal Licence No. LII/RNP-WPP-03**

नए उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री अनंत जेना, हावड़ा

2. Mr. Lionel Pilimatalawe, *Sri Lanka*

3-4. Mr. Ziv Emet & Mrs. Ayelet Mehahemi, *Israel*

5. Ms. Evie Chauncey, *Canada*
(कनाडा के वानकूवर द्वीप के क्षेत्रीय आचार्य की सहायता.)

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री अभिजीत विजय भाभे, नवी मुंबई
२. सुश्री इंदु पुरुषोत्तम बिलानी, मुंबई
३-४. श्री सुदर्शन एवं श्रीमती सुधा ग्रोवर, थाने
५. श्री भरत ग्रोवर, थाने

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्री गणपतराव धुमाल, फल्टन (महाराष्ट्र)
२. श्री रोहिदास व्यवहारे, भुसावल
३. श्री गौतम गोस्वामी, कच्छ
४. श्रीमती प्रज्ञाबेन गोस्वामी, कच्छ
५. सुश्री खुशबू भट्ट, कच्छ
६. श्रीमती शिवगंगा रत्नाकर गायकवाड, पुणे
७. श्री गुलाब ज्ञानदेव बनसोडे, रायगढ़
८. सुश्री स्वाती जाधव, मुंबई
९. सुश्री निशा शेनाय, मुंबई
१०. श्री राजेश शर्मा, छत्तीसगढ़

11. Ma Kam Moe Moe, *Myanmar*
12. Daw Myint Myint San, *Myanmar*
13. Ma Hla Myint, *Myanmar*
14. Ma Khin Khin Aye, *Myanmar*
15. U Tun Myint, *Myanmar*
16. U Thein Htay, *Myanmar*
17. Daw Tin Tin Htay, *Myanmar*
18. Daw Nway Nway, *Myanmar*
19-20. Mr. Ford James & Mrs. Caroline Dezan, *USA*

दोहे धर्म के

धरम रतन सा जगत में, अन्य रतन ना कोय।
जो पाए समृद्ध हो, दुःख-दैन्यता खोय॥

बुद्ध रतन में धरम ही, रतन प्रमुखतम होय।
महा कारुणिक जगत हित, धर्म-प्रकाशक होय॥

संघ रतन में धरम ही, रतन प्रमुखतम होय।
काया वाणी चित्त के, कर्म धर्ममय होंय॥

तीन रतन की शरण में, धरम रतन ही जान।
धरम रतन धारण करे, तो ही हो कल्याण॥

जो अपने कल्याण में, सतत सहायक होय।
कल्याणमित्र भवमुक्ति में, सहयोगी ही होय॥

ऐसे मंगल मित्र से, सच्चा हित सुख होय।
शुद्ध धरम का पथ मिले, मुक्ति दुखों से होय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोन: २४९३ ८८९३, फैक्स: २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

दुरलभ होणो बुद्ध को, दुरलभ बुद्ध मिलाप।
सुद्ध धरम पाए बिना, मिटै नहीं भवताप॥

बुद्ध समागम स्यूं मिलै, सुद्ध धरम रो सार।
सुद्ध धरम स्यूं छूटज्या, कर्म-कांड निस्सार॥

सुद्ध धरम स्यूं टूटज्या, सम्प्रदाय री बाड़।
छुटज्या दरसन मान्यता, खुलज्या मुक्ति किवाड़॥

बाम्मण ह्वै या सूद्र ह्वै, राजा ह्वै या रंक।
सुद्ध धरम धार्‌यां हुवै, निरमल अभय असंक॥

दुरलभ जीवन मनुज को, घणै पुण्य स्यूं पाय।
नातर भव-भव भ्रमण मँह, अधोगती हि समाय॥

मानव को जीवन मिल्यो, धरम मिल्यो अनमोल।
अब सरधा स्यूं जतन स्यूं, बंधन लेवां खोल॥

आकांक्षा इंटरप्राईसेस
ई - १/८२, अरेरा कालोनी, भोपाल (म. प्र.) - ४६२०१६
फोन: (०७५५) २४६१२४३, २४६२३५१; फैक्स: (०७५५) २४६८१९७
Email: aeent@airtelbroadband.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५५०, पौष पूर्णिमा, ३ जनवरी, २००७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६**/७१. Regn. No. LII/REN./RNP-46/2006-08

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- LII/RNP-WPP-03
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
e-mail: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org